# वर्तमान वित्तीय संकट का वैश्विकरण पर प्रभाव (भारतीय अर्थव्यवस्था के विशेष संदर्भ में)

**डॉ. बासंती मैथ्यू मेरलिन**
सहा.प्राध्यापक (वाणिज्य संकाय) आइसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश
*भारतीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण की प्रक्रिया नब्बे के दशक से प्रारंभ हो गयी जबकि सरकार ने विश्व की प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले रूपये का अवमूल्यन कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्वीकरण ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण में गिरावट के मूल्य को पहचाना जिसका उद्देश्य वैश्वीकरण की नवीनकृत प्रक्रिया का निरीक्षण करना है तथा इसको बढावा देना है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सन 2008 के मध्य से वित्तीय संकट रहा है, यह स्थिति अगस्त 2007 से अमरीकी वित्तीय बाजार में पहले पहल उभरी और सितम्बर 2008 में शिखर पर पहँची । वित्तीय संकट अमेरीका से यूरोप और एशिया के देशों में सम्पूर्ण विश्व में फेल रहा है, यह भी सही है कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में वित्तीय उतार – चढाव आते रहते हैं, और इसे स्वीकारा जाने लगा है। संसार के सभी देशों में एक सा विकास नहीं है। कुछ देश जैसे संयुक्त राज्य अमेरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया यूरोप के कुछ देश उच्च स्तरीय अवस्थाओं के हैं। पिछले कुछ दशकों में वैश्विकरण बहुत तेजी से हुआ है। जिसके परिणामस्वरूप पूरे विश्व भर में आर्थिक सामाजिक राजनीतिक में तकनीकि दूर संचार आदि की उन्नति के माध्यम से वृद्धि हुई है।*

***मुख्य बिन्दु :*** वित्तीय संकट, वैश्वीकरण, भारतीय अर्थव्यवस्था

## I प्रस्तावना

प्रारंभ से ही भारत एक धनी देश रहा है। इसकी प्राचीन वैभवशाली समृद्धि व साधनों के कारण इसे सोने की चिडिया कहा जाता रहा है। दो हजार वर्ष पूर्व भारत ने उस समय विश्व के व्यापार क्षेत्र में अपने सिक्का जमाया था जब वह अपने जायकेदार मसालों , खुशबूदार इत्रों एवं रंग–बिरंगे कपड़ों कें लिए जाना जाता था। भारत का व्यापार इतना व्यापक था कि एक बार रोम की सांसद ने एक विधेयक के माध्यम से अपने लोगो के लिए भारतीय कपड़े का प्रयोग निषिद्ध करार दिया ताकि वहां के सोने के सिक्कों को भारत ले जाने से रोका जा सके। । भारतीय अर्थव्यवस्था में विश्व व्यापार संगठन और गैट समझौते के बाद पूँजीवादी देशों के साथ प्रतिस्पर्धा का दौर चला। जिसमें सार्क देशों को शामिल किया जाता है। व्यापार की नीतियों का निर्धारण किया जाता है। दक्षिण एशियाई वरीयता व्यापार समझौता तथा भारत यूरोपीय संघ का सबसे बडा व्यापारिक समझौता रहा है। वैश्विकरण का बाजारों की तीव्रता के माध्यम से पूरे विश्व में बहुत से परिवर्तन किए है। पूरे विश्व में वस्तु को फैलाना ही वैश्विकरण है। बढ़ते अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार व विनियोग के माध्यम से विश्व अर्थव्यवस्था आज विश्वीकरण की ओर अग्रसर हो रही है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तेजी से एक दूसरे पर निर्भर होती जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय और आर्थिक परिस्थितियों में उत्पन्न हुये परिवर्तनों से भारत जैसे देश भी अछूते नहीं रहे।

## II उद्देश्य

(क) भारतीय वित्तीय बाजार पर वैश्विकरण का प्रभाव

(ख) अर्थव्यवस्था पर वित्तीय संकट का प्रभाव का मूल्यांकन करना

## III भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रभाव

भारत एक विशाल देश हैं । क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में भारत का सातवाँ तथा कुल जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान है। भारतीय अर्थव्यवस्था पर दृष्टि डालने से इसमें अनेक विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। इनमें ो कुछ विशेषताएँ अल्पविकसित विशेषताओं के अनुरूप है।

(क) निम्न प्रति व्यक्ति आय
(ख) धन का असमान वितरण
(ग) कृषि की प्रधानता
(घ) असन्तुलित आर्थिक विकास
(च) बाजार की अपूर्णताएं
(छ) आर्थिक कुचक्र का जोर

## IV वर्तमान वित्तीय संकट

पिछले 50 वर्षो में दुनिया ने जितने आर्थिक परिवर्तन का सामना किया हैं वैसा इतिहास में पहले कभी घटा नहीं था। कुछ लोगों के लिये स्वतंत्र बाजार नियमित था तो कुछ लोगों के लिये भारी परेशानी भरा था। जब वित्तीय संस्थाओं ने वैश्वीक दौर के कारण एक दूसरे को उधार देना प्रायः बन्द कर दिया तो इसका प्रभाव विश्व के बाजार पर भी देखा गया। सम्पत्तियों और वस्तुओं की कीमत में ह्रास होने लगा, इसकी वजह से विकसित देशों में आय घटने लगी, मांग और व्यापार पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। वित्तीय संकट का केन्द्र बिन्दु विकसित देश थे, फिर भी भारत जैसे उदीयमान देश पर भी इसका प्रभाव पड़ा। समष्टि आर्थिक स्थिरता की इस दीर्घ अवधि को उन्मुक्त बाजार तथा सफल भूमंडलीकरण का परिणाम बताया गया लेकिन इस ओर शायद ही ध्यान गया कि इस समृद्धि के पीछे जटिल वित्तीय व्यवस्था किया कर रही थी । बचत व निवेश, उत्पादन तथा उपभोग में असंतुलन के रूप में परिवर्तन हो रहे थे। जबकि सरकार ने विश्व की प्रमुख मुद्राओं

के मुकाबले रूपये का 20 प्रतिशत अवमूल्यन किया था ।

## V वैश्वीकरण का आरंभ

बीसवीं सदी का अंत औंर इक्कीसवीं सदी का प्रारंभ वैश्वीकरण की प्रकिया का आरंभ का हैं। वैश्वीकरण बहुआयामी प्रकिया है। जो सम्पूर्ण विश्व और मानव समाज को संचालित करती है। जो विकास के नाम पर व्यापक बाजार में खडा करती है। यह नई तकनीक और वैज्ञानिक अविष्कार व वैश्वीकरण के माध्यम भी है और स्वरूप है । वैश्वीकरण एक विश्वव्यापी संवृत्ति है इसका प्रभाव साम्राज्यवाद पर अधिक हैं जिसके नव औपनिवेशिक और प्रभुत्व मुख्य भाग है।

## VI वैश्वीकरण और आर्थिक प्रणाली

अमेरिका ने आर्थिक उदारीकरण की नीतियों के द्वारा छोटे– छोटे देशों की अर्थव्यवस्था के दरवाजे खुलवा दिये है। सभी देश ूपजी की नियंत्रणकारी तालमेल बैठाने का प्रयास कर रहे है। वैश्वीकरण की दशा में कदम तटकरों में कमी करके उठाया गया, सरकार ने सीमा शुल्कों में भारी कटौती की और विदेशी प्रत्यक्ष विनियोग तथा विदेशी प्रौद्योगिकी के लिए भी कर के प्रावधान रहे। इसी के साथ आयात – निर्यात व अन्य नीतियों के द्वारा विदेशी पूँजी को वातावरण के अनुकूल किया गया। यह सुनिश्चित करना बहुत ही कठिन है कि वैश्वीकरण मानवता के लिये लाभप्रद है या हानिकारक।एडम स्मिथ को मुक्त बाजार की अवधारणा का प्रतिपादक माना जाता है । उनकी मान्यता थी कि यदि आर्थिक प्रकिया में राज्य कोई हस्तक्षेप न करे तो उत्पादन में विकास होता जायेगा और एक ' अदृश्य हाथ 'उसके लाभों को निम्नतम स्तर तक पहुंचा देगा। मुक्त बाजार की प्रतिस्पर्धा कीमतों कों कम रखने और आर्थिक कुशल बनाने में सहायक होगी, जिसका स्वाभाविक परिणाम होगा उपभोक्ता अर्थात् समाज को कम कीमत में अधिक कुशल उत्पादन या सेवा मिलना है।

## VII वैश्वीकरण का आर्थिक प्रभाव

## VIII चुनौतियां

(क) जिन देशों ने वैश्वीकरण को अपनाया उन्होंने उससे पूर्व अपने यहां इसके लिये वातावरण तैयार किया। भारत ने वैश्वीकरण हेतु अपनी दिशा तो परिवर्तित कर ली परन्तु स्वतंत्र बाजार की दिशा में गति बहुत धीमी रखी है। जिससे संरचनात्मक सुधार अर्थव्यवस्था में उचित व पूर्ण रूप से नहीं हो रहे ।

(ख) अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतियोगिता कर सके इसके लिये किस्म में सुधार व उत्पादन बढ़ाने के लिए बड़ी मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती, भारत जैसे देशों को विश्व बैंक व मुद्रा कोष के पास जाना पड़ेगा और विकसित देश अनुचित शर्तें मानने के लिए बाध्य करेगी।

(ग) वैश्वीकरण के सकारात्मक आयामों के साथ ही इसके नकारात्मक प्रभाव भी है। एक देश से दूसरे देशों के बीच मेंप्रतिस्पर्धा को बढावा देते हैं।

(घ) भारतीय कृषि और किसान की हालत तो और भी खराब है। यह व्यवस्था न तो स्वतत्रंता की पुष्टि करता है और न समाज के लिये आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद है।

(च)यदि कोई देश अपने यहां के उत्पादक बाजार को कुछ सब्सिडी देता या दूसरों की अपेक्षा अधिक सुविधाएं उपलब्ध करवाता है तो यह स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को दबाना है, जिसका खामियाजा अंततः उपभोक्ता अर्थात समाज को उठाना पड़ता है।

(छ) वास्तविक अर्थों में प्रतिस्पर्धा तो तभी माने जा सकते हैं जब वे अपने माल को दूसरे से कम कीमत में मुहैया करवाए। लेकिन यदि वे कीमतें बढ़ाने के लिए

मिल जाते हैं तो इसका सीधा मतलब यह है कि उनकी प्रतिस्पर्धा एक आभासी प्रतिस्पर्धा मात्र है, वास्तविक नहीं। जिसका मुद्रास्फीति पर प्रभाव पडे.गा।

## IX समाधान

(क) हमारी अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण की दिशा में चल चुकी है, परन्तु इस दिशा में किये गये प्रयासों की सफलता में संदेह भी है इस समय न तो अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण ही उपर्युक्त है और न ही हमारी आंतरिक आर्थिक परिस्थिति प्रतिस्पर्धा के अनुसार है, परन्तु भारतीय व्यवसाय नई नीतियों के अनुसार तैयार हो चुकी है।

(ख) मानव जीवन पर वैश्वीकरण के बुरे प्रभावों को रोकने के लिए सरकार का वैश्वीकरण पर पूरा नियंत्रण होना चाहिए।

(ग) वैश्वीकरण के कारण कम्पनियों या कारखानों के स्तर पर आर्थिक वृद्धि हुई है, वे पहले से भी अधिक उत्पादक हो गये है, इसमें सस्ते श्रम और कम मजदूरी के माध्यम से स्थानीयकरण का लाभ मिलने लगा है।

(घ) वैश्वीकरण उदारीकरण की नीति का बोलबाला है, इसका सीधा प्रभाव आर्थिक प्रक्रिया पर एक स्वायत्त रूप और उसमें हस्तक्षेप विकास को बाधित करता है। जिसका समाधान करना अति आवश्यक है।

## X निष्कर्ष

जिस तेजी से चीन से टकराव व अमेरीका के साथ व्यवसायिक समझौते है यह भारत की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करेगें। वर्तमान में विचार करें तो भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण की नीति का अनुकूल प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण के कारण छोटे 5 राष्ट्रों के निर्यात में क्रमशः 16.2 प्रतिशत तथा 19.7 प्रतिशत है जबकि भारत जैसे विशाल राष्ट्र का अंश मात्र 3.3 प्रतिशत है, इस उपलब्धि को देखते हुये आशा की जाती है कि वैश्वीकरण के कारण भारत के निर्यात में भी पर्याप्त वृद्धि होगी। भारतीय अर्थव्यवस्था को जीवन्तता प्रदान करने और भारतीय उद्योगों को संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से वैश्वीकरण का प्रयास निर्विवाक रूप से सफल रहे है। वैश्वीकरण घरेलू उद्योगों को अत्यधिक सक्षम कुशल व जीवित बनाने का भरसक प्रयास ही नहीं था, बल्कि विदेशी पूंजी एवं विनियोग का उदारपूर्ण दृष्टिकोण भी था इस प्रकार अर्थव्यवस्था पर उत्साह पूर्ण परिणाम परिलक्षित हुये है। हमारी अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण की दिशा में चल चुकी है आर्थिक वैश्वीकरण ने दुनिया भर पर प्रभाव डाला है।

## सन्दर्भ


[1] Albrow, Martin and Elizabeth King (eds.) (1990). Globalization, Knowledge and Society London: Sage. ISBN 9780803983236

[2] *Babones, Salvatore (15 April 2008). "Studying Globalization: Methodological Issues". In George Ritzer.* The Blackwell Companion to Globalization. *John Wiley & Sons. p. 146.* ISBN 978-0-470-76642-2.

[3] Frank, Andre Gunder. (1998). ReOrient: Global economy in the Asian age. Berkeley: University of California Press. ISBN 978-0520214743

[4] Strazdins, L., Welsh, J., Korda, R., Broom, D. and Paolucci, F. (2016), Not all hours are equal: could time be a social determinant of health?. Sociol Health Illn, 38: 21–42. doi:10.1111/1467-9566.12300

[5] Herlinger, Chris. "Bangladesh Counts The Human Cost Of The Garment Industry. (Cover Story)." National Catholic Reporter 52.14 (2016): 1–16. Academic Search Premier. Web

[6] Prieto-Carrón, Marina. "Is there Anyone Listening?: Women Workers in Factories in Central America, and Corporate Codes of Conduct." Development 47.3 (2004): 101–05. ProQuest. Web.

[7] Berik, G., and Y. Van Der Meulen Rodgers. "What's Macroeconomic Policy Got to Do with Gender Inequality? Evidence from Asia." Global Social Policy 12.2 (2012): 183–89. Web

[8] Shafik Hebous (2011) "Money at the Docks of Tax Havens: A Guide", CESifo Working Paper Series No. 3587, p. 9

[9] In Defense of Globalization By Jagdish Bhagwati Oxford University Press, 2004

[10] Globalization: Trends and Perspectives By Bishop, Tiffany; Reinke, John; Adams, Tommy Journal of International Business Research, Vol. 10, No. 1, January 2011

[11] Globalization: The Key Concepts By Thomas Hylland Eriksen Berg, 2007